आत्म

ज्ञान प्रकाश और सामर्थ का आत्मा

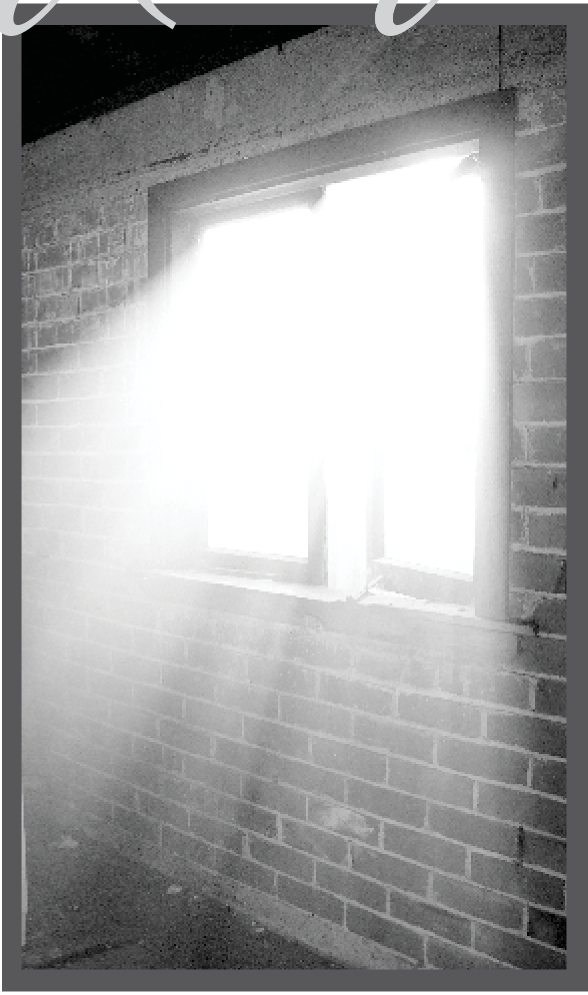

आशीष रायचूर

मुद्रण और वितरणः **ऑल पीपल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क, बंगलौर**
प्रथम संस्करण : मई 2016

अनुवादक : डॉर्थी शरदकान्त थॉमस
प्रूफ रीड़िंग : शरदकान्त थॉमस
मुखपृष्ठ एवं ग्राफिक डिज़ाईन : करूणा जेरोम, बाईफेथ डिज़ाईन्ज

Contact Information:
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org

इस्तेमाल किए गए बाइबल के संदर्भ पवित्र बाइबल से लिए गए हैं।

निशुल्क वितरण हेतु
इस पुस्तक का विनामूल्य वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों के आर्थिक अनुदानों के द्वारा संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क पुस्तक के द्वारा आशीष पाई है, तो हम आपको निमंत्रित करते हैं कि ऑल पीपल्स चर्च की निःशुल्क प्रकाशन सामग्री की छपाई और वितरण में सहायता करने हेतु आर्थिक रूप से हमें योगदान दें। धन्यवाद!

(Hindi book - The Spirit of Wisdom, Revelation and Power)

ज्ञान, प्रकाश और सामर्थ्य का आत्मा

विषयसूचि

1	बुद्धि का आत्मा	1
2.	प्रकाशन का आत्मा	14
3.	सामर्थ का आत्मा	23

1

बुद्धि का आत्मा

पिता और पुत्र के साथ पवित्र आत्मा भी परमेश्वर है। और वह यहां पर पृथ्वी पर है – परमेश्वर के लोगों के जीवनों में और उनके द्वारा कार्य करता है। वह कई भिन्न तरीकों से खुद को अभिव्यक्त करता है और परमेश्वर के लोगों में और उनके द्वारा कार्य करता है, वह कई कार्यों को हासिल करने हेतु उन्हें योग्य बनाता है। इस पाठ में, हम पवित्र आत्मा के कई कार्यों में से एक पर अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे। हमारा उद्देश्य आपको परमेश्वर के आत्मा के कार्य के इस पहलू से परिचित कराना है। हमारी प्रार्थना है कि कई लोग परमेश्वर के अद्‌भुत आत्मा को ज्ञान की आत्मा के रूप में खोजने और अनुभव करने हेतु प्रोत्साहन पाएंगे।

परमेश्वर का आत्मा – उसके विभिन्न गुण

तब यिशै के ठूंठ में से एक डाली फूट निकलेगी और उसकी जड़ में से एक शाखा निकलकर फलवन्त होगी। और यहोवा की आत्मा, बुद्धि और समझ की आत्मा, युक्ति और पराक्रम की आत्मा, और ज्ञान और यहोवा के भय की आत्मा उस पर ठहरी रहेगी (यशायाह 11:1,2)।

भविष्यद्वक्ता यशायाह ने उस अभिषेक के विषय में बताया जो यीशु की संसारिक सेवकाई के दौरान उस पर रहने वाला था। उसने मसीह पर (अभिषिक्त) पवित्र आत्मा की सामर्थ के सात विभिन्न पहलुओं को उसने प्रस्तुत किया। उसने सात विभिन्न 'उपाधियों' का उपयोग किया, हर एक उपाधी पवित्र आत्मा के कार्य के, अतः उसके चरित्र के एक विशिष्ट पहलु पर प्रकाश डालती है। पवित्र आत्मा को निम्नलिखित रूपों में सम्बोधित किया गया है:

- प्रभु का आत्मा
- बुद्धि का आत्मा
- समझ का आत्मा
- युक्ति का आत्मा
- सामर्थ का आत्मा
- ज्ञान का आत्मा
- परमेश्वर के भय का आत्मा

यह पूर्ण सूचि नहीं है, क्योंकि हम अन्य वचनों को भी देखते हैं जहां पर पवित्र आत्मा का अन्य "उपाधियों" या नामों के साथ उल्लेख किया गया है, जैसे, सत्य का आत्मा, जीवन का आत्मा, सहायक (या सांत्वना देनेवाला), आदि। परंतु हमें यह समझने की जरूरत है कि इनमें से हर एक उपाधी या नाम पवित्र आत्मा कौन है और वह क्या करता है इसके विशिष्ट पहलू को प्रगट करता है। वह कौन है और क्या करता है, यह जानना महत्वपूर्ण है, क्योंकि तभी हम उसके साथ गहरी संगति रख पाएंगे और बड़े पैमाने पर हम में और हमारे द्वारा उसे कार्य करता हुआ अनुभव कर पाएंगे।

परमेश्वर का आत्मा – सर्वत्र उपस्थित और सदैव कार्यरत

और मैं पिता से बिनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे (यूहन्ना 14:16)।

पवित्र आत्मा यहां पर हमारे लिए है – उनके लिए जिन्होंने विश्वास के द्वारा प्रभु यीशु के लोहू से उद्धार पाया है। वह यहां पर हमारे साथ रहने के लिए, हममें कार्य करने के लिए और हमारे द्वारा कार्य करने के लिए है। वह हमेशा हमारे साथ है। वह कोई रहस्यमय अनदेखी शक्ति या उपस्थिति के रूप में नहीं है जिसके विषय में हम केवल बोल सकते हैं, परंतु अनुभव नहीं कर सकते। नहीं! वह सबकुछ बनना चाहता है जो वह हमारे लिए है। वह हमारे द्वारा उन कामों को

करना चाहता है, जिन्हें केवल वही कर सकता है। वह हमारे जीवनों में सामर्थ प्रदान करना चाहता है।

इस अध्याय में हम पवित्र आत्मा को दी गई उपाधियों/नामों में से एक पर अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे – बुद्धि का आत्मा। बुद्धि के आत्मा के रूप में, वह हमारे जीवन में ईश्वरीय बुद्धि प्रदान करता है – परमेश्वर की बुद्धि। एक या दो वाक्य में, परमेश्वर की बुद्धि क्या है इसे परिभाषित करना कठिन है। हम जानते हैं वह कहां आरम्भ होती है (भजन. 111:10)। हम उसकी विशेषताओं को जानते हैं (याकूब 3:17)। और फिर भी क्योंकि परमेश्वर की बुद्धि अनंत है (रोमियों 11:33), वह क्या है इसे चंद शब्दों में पर्याप्त रूप से अभिव्यक्त करना मुश्किल है। कुछ लोगों ने कहा है कि बुद्धि (सामान्य तौर पर) ज्ञान का उपयोग करने की योग्यता है। अन्य लोगों ने कहा है कि ईश्वरीय बुद्धि परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों की अंतर्दृष्टि है। ईश्वरीय बुद्धि – जो बुद्धि परमेश्वर की ओर से आती है, जो परमेश्वर का आत्मा हमारे जीवनों में प्रदान करता है, यह है और इससे बहुत अधिक।

इस अध्याय में, हम वचनों का अध्ययन करेंगे और सीखेंगे कि किस प्रकार बुद्धि के आत्मा ने भूतकाल में लोगों के जीवनों में कार्य किया है। इससे हम देखेंगे कि आज वह हम में और हमारे द्वारा कैसे कार्य कर सकता है, क्योंकि वह बदला नहीं है! इससे हमारे विश्वास में उन्नति प्राप्त होगी और हमारे अंदर कार्य करने वाले परमेश्वर के आत्मा से हम अपेक्षा करेंगे कि वह बुद्धि की आत्मा के रूप में हम में कार्य करें। अर्थात्, जिस प्रकार उसने भूतकाल में कार्य किया, उस तरह कार्य करने हेतु वह सीमित नहीं है। वह परमेश्वर है। बुद्धि का आत्मा अवश्य ही हमारे अंदर और हमारे द्वारा ताज़गीपूर्ण एवं नई रीति से कार्य करेगा।

समस्याओं को सुलझाने हेतु बुद्धि – यूसुफ

यह वही बात है, जो मैं फ़िरौन से कह चुका हूं, कि परमेश्वर जो काम किया चाहता है, उसे उसने फ़िरौन को दिखाया है। सुन, सारे मिस्र देश

में सात वर्ष तो बहुतायत की उपज के होंगे। उनके पश्चात् सात वर्ष अकाल में आयेंगे, और सारे मिस्र देश में लोग इस सारी उपज को भूल जाएंगे; और अकाल से देश का नाश होगा। और सुकाल (बहुतायत की उपज) देश में फिर स्मरण न रहेगा क्योंकि अकाल अत्यंत भयंकर होगा। और फ़िरौन ने जो यह स्वप्न दो बार देखा है उसका भेद यही है, कि यह बात परमेश्वर की ओर से नियुक्त हो चुकी है, और परमेश्वर इसे शीघ्र ही पूरा करेगा। इसलिये फ़िरौन किसी समझदार और बुद्धिमानी पुरुष को ढूंढ करके उसे मिस्र पर प्रधान मंत्री ठहराएगा। फ़िरौन यह करे, कि देश पर अधिकारियों को नियुक्त करे, और जब तक सुकाल के सात वर्ष रहे तब तक वह मिस्र देश को उपज का पंचमांश लिया करे। और वे इन अच्छे वर्ष में सब प्रकार की भोजन वस्तु इकट्ठा करें, और नगर नगर में भण्डार घर भोजन के लिये फ़िरौन के वश में करके उसकी रक्षा करें। और वह भोजन वस्तु अकाल के उन सात वर्ष के लिये, जो मिस्र देश में आएंगे, देश के भोजन के निमित्त रखी रहे, जिससे देश उस अकाल से सत्यानाश न हो जाए। यह बात फ़िरौन और उसके सारे कर्मचारियों को अच्छी लगी। सो फ़िरौन ने अपने कर्मचारियों से कहा, कि क्या हमको ऐसा पुरुष जैसा यह है, जिसमें परमेश्वर का आत्मा रहता है, मिल सकता है? फिर फ़िरौन ने यूसुफ से कहा, परमेश्वर ने जो तुझे इतना ज्ञान दिया है, कि तेरे तुल्य कोई समझदार और बुद्धिमान् नहीं; इस कारण तू मेरे घर का अधिकारी होगा, और तेरी आज्ञा के अनुसार मेरी सारी प्रजा चलेगी, केवल राजगद्दी के विषय मैं तुझसे बड़ा ठहरूंगा। (उत्पत्ति 41:28–40)।

यूसुफ फिरौन के स्वप्न का अर्थ बताता है और अकाल के सात वर्षों के विषय में जो भरपूरी के सात वर्षों के बाद आने वाला था, उसके विषय में भविष्यद्वाणी करता है, इसके सम्बंध में जो बात हमें प्रभावित करती है वह यह है कि वह वहीं पर नहीं रुक गया। उसने केवल समस्याओं के विषय में भविष्यद्वाणी नहीं की जो सात वर्षों में सम्पूर्ण राष्ट्र पर आने वाली थी। उसने उसका समाधान भी प्रस्तुत किया! समस्या को सुलझाने के लिए उसने एक योजना प्रस्तुत की! जिस

परमेश्वर ने यूसुफ को स्वप्नों का अर्थ बताने की योग्यता प्रदान की, उसी ने उसे समाधान प्रदान करने हेतु बुद्धि दी। निःसंदेह परमेश्वर यूसुफ के साथ था (उत्पत्ति 39:2)। परमेश्वर ने यूसुफ के जीवन में जो दिया, उससे वह "विवेकी और बुद्धिमान" बन गया। यह इस बात का उदाहरण है कि बुद्धि का आत्मा कार्यरत है। वह हमें न केवल आने वाली घटनाओं को समझने हेतु बुद्धि देता है, वरन आने वाली समस्याओं के लिए मज़बूत और सुयोग्य उपायों को देखने की बुद्धि प्रदान करता है। जैसे जैसे हम बुद्धि की आत्मा पर निर्भर होने लगेंगे, वैसे वैसे हम विवेक और बुद्धि के साथ चलने योग्य बनेंगे।

कौशलपूर्ण एवं कलापूर्ण कार्यों के लिए बुद्धि – मिलाप के तम्बू में काम करने वाले

फिर यहोवा ने मूसा से कहा, सुन, मैं ऊरो के पुत्र बसलेल को, जो हूर का पोता और यहूदा के गोत्र का है, नाम लेकर बुलाता हूं। और मैं उसको परमेश्वर की आत्मा से जो बुद्धि, प्रवीणता, ज्ञान, और सब प्रकार के कार्यों की समझ देनेवाली आत्मा है परिपूर्ण करता है। जिससे वह कारीगरी के कार्य बुद्धि से निकाल निकालकर सब भांति की बनावट में, अर्थात् सोने, चांदी, और पीतल में, और जड़ने के लिये मणि काटने में, और लकड़ी के खोदने में काम करे (निर्गमन 31:1–5)।

मिस्र से वाचा के देश की ओर यात्रा करने वाले परमेश्वर के लोगों के लिए जब निवास का तम्बू नाने का समय आया, तब उन्हें कारीगरों की आवश्यकता पड़ी। इसलिए परमेश्वर ने बसलेल नामक व्यक्ति को चुना और उसे पवित्र आत्मा से भर दिया। परमेश्वर के आत्मा ने बसलेल को "प्रवीणता, योग्यता और ज्ञान" प्रदान किया, जिसकी एक कुशल कारीगर बनने हेतु, निवास के तम्बू के लिए नक्काशियां एवं कलाकृतियों को बनाने हेतु आवश्यकता थी। पवित्र आत्मा ने एक मनुष्य को कला कुशलता और योग्यता प्रदान की! बुद्धि का आत्मा आज भी हमारे लिए यह कर सकता है! ज़रूरी नहीं कि यह सोने या चांदी का काम हो, क्योंकि कला में प्रवीणता कई भिन्न रूपों में

अभिव्यक्त की जा सकती है। इसके अलावा, यह मात्र कला कुशलता तक ही सीमित नहीं है, परंतु सामन्यतया सब प्रकार के गुणों (काम करने की योग्यता) के लिए है। अच्छा डॉक्टर बनने के लिए प्रवीणता की ज़रूरत है, अच्छा खाना बनाने के लिए, अच्छे कम्प्युटर कार्यक्रमों का लेखन करने हेतु, लिखने के लिए, बोलने के लिए, और अन्य कई बातों के लिए प्रवीणता या कुशलता चाहिए। बुद्धि का आत्मा प्रवीणता, योग्यता और ज्ञान प्रदान कर सकता है।

अब इस चित्र को समझ लीजिए, कहीं हम पवित्र आत्मा के कार्य के विषय में गलत कल्पना न कर बैठें। यहां पर बसलेल नाम का व्यक्ति है जो बुद्धि की आत्मा से परिपूर्ण है। क्या आप 'देख सकते हैं' कि वह रेगिस्तान की तपती धूप में पसीने और बदबू से तरबतर होकर अपने औजारों की सहायता से काम करता हुआ अपने तम्बू में बैठा है? यहां पर किस बात को समझना है? पवित्र आत्मा हमारे अंदर कार्य करता है, इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें काम करना नहीं होगा... परिश्रम करना नहीं होगा! पवित्र आत्मा हमें बुद्धि, प्रवीणता, योग्यता और ज्ञान देगा, परंतु हमें पसीना बहाकर काम करना है! आलस के लिए जगह नहीं है।

सिखाने और निर्देश देने की बुद्धि – बसलेल

तब मूसा ने इस्राएलियों से कहा, सुनो, यहोवा ने यहूदा के गोत्रवाले बसलेल को, जो ऊरी का पुत्र और हूर का पोता है, नाम लेकर बुलाया है। और उसने उसको परमेश्वर के आत्मा से ऐसा परिपूर्ण किया है कि सब प्रकार की बनावट के लिये उसको ऐसी बुद्धि, समझ और ज्ञान मिला है, कि वह कारीगरी की युक्तियां निकालकर सोने, चांदी और पीतल में, और जड़ने के लिये मणि काटने में और लकड़ी के खोदने में, वरन बुद्धि से सब भांति की निकाली हुई बनावट में काम कर सके। फिर यहोवा ने उसके मन में और दान के गोत्रवाले अहीसामाक के पुत्र आहोलीआब के मन में भी शिक्षा देने की शक्ति दी (निर्गमन 35:30–34)।

यह देखना दिलचस्प होगा कि पवित्र आत्मा ने बसलेल को न केवल कलात्मक योग्यता और प्रवीणता प्रदान की, बल्कि उसे "दूसरों को सिखाने की योग्यता" भी प्रदान की। हमारे पास जो ज्ञान और कौशल है उसका उपयोग करने की योग्यता होना एक बात है – कई लोग जिस काम का ज्ञान और योग्यता उन्हें होती है उसे करने में कुशल होते हैं – परंतु वह ज्ञान किसी और को देना और उन्हें प्रशिक्षित करना अलग बात है। ऐसा करने की योग्यता कई लोगों में नहीं होती। यहां पर हम देखते हैं कि परमेश्वर बसलेल और अहलियाब को वह योग्यता देता है – सिखाने, प्रशिक्षित करने और निर्देश देने की योग्यता, जो प्रवीणता और ज्ञान उन्होंने पाया है, उसे दूसरों को प्रदान की योग्यता। बुद्धि की उसी आत्मा ने उन्हें यह करने की योग्यता प्रदान की। बुद्धि का आत्मा हमें भी "दूसरों को सिखाने की योग्यता" से हमें परिपूर्ण कर सकता है।

नेतृत्व के लिए बुद्धि – यूसुफ, मूसा, यहोशू, सुलैमान

और नून का पुत्र यहोशू बुद्धिमानी की आत्मा से परिपूर्ण था, क्योंकि मूसा ने अपने हाथ उस पर रखे थे; और इस्राएली उस आज्ञा के अनुसार जो यहोवा ने मूसा को दी थी उसकी मानते रहे (व्यवस्थाविवरण 34:9)।

अब मुझे ऐसी बुद्धि और ज्ञान दे, कि मैं इस प्रजा के सामने अन्दर–बाहर आना–जाना कर संकू, क्योंकि कौन ऐसा है कि तेरी इतनी बड़ी प्रजा का न्याय कर सके? परमेश्वर ने सुलैमान से कहा, तेरी जो ऐसी ही मनसा हुई, अर्थात् तू ने न तो धन सम्पत्ति मांगी है, न ऐश्वर्य और न अपने बैरियों का प्राण और न अपनी दीर्घायु मांगी, केवल बुद्धि और ज्ञान का वर मांगा है, जिस से तू मेरी प्रजा का जिसके ऊपर मैं ने तुझे राजा नियुक्त किया है, न्याय कर सके; इस कारण बुद्धि और ज्ञान तुझे दिया जाता है। और मैं तुझे इतान धन सम्पत्ति और ऐश्वर्य दूंगा, जितना न तो तुझ से पहले किसी राजा को, मिला और न तेरे बाद किसी राजा को मिलेगा (2 इतिहास 1:10–12)।

जो न्याय राजा ने चुकाया था, उसका समाचार समस्त इस्राएल को मिला, और उन्होंने राजा का भय माना, क्योंकि उन्होंने यह देखा, कि उसके मन में न्याय करने के लिये परमेश्वर की बुद्धि है (1 राजा 3:28)।

हम परमेश्वर के लोगों का उदाहरण देखते हैं – यूसुफ, मूसा और अन्य – जो बुद्धि की आत्मा की वजह से महान अगुवे सिद्ध हुए। यहोशू ने जब मूसा से नेतृत्व की ज़िम्मेदारी प्राप्त की, तब उसे बुद्धि का आत्मा प्रदान किया गया। परमेश्वर के लोगों का अगुवा होने के लिए यहोशू को इसी बात की आवश्यकता थी। सुलैमान ने परमेश्वर के लोगों पर राज्य और शासन करने हेतु बुद्धि की जो चाह रखी, उसे परमेश्वर प्रसन्न हुआ। बुद्धि का आत्मा व्यक्ति को धर्मी और सफल अगुवा बनने योग्य सामर्थ देता है। कलीसिया को इसी बात की आवश्यकता है। राष्ट्रों, निगमों और संस्थाओं की इसी बात की आवश्यकता है। हमें बुद्धि की आत्मा से परिपूर्ण अगुवों की ज़रूरत है। यदि आप नेतृत्व के किसी भी पद पर हैं तो सफलतापूर्ण अपने ज़िम्मेदारी को पूरा करने हेतु परमेश्वर की आत्मा से उसकी बुद्धि मांगें।

बुद्धिमानीपूर्ण रूपरेखा के लिए बुद्धि – दाऊद

तब दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान को मन्दिर के ओसारे, कोठरियों, भण्डारों अटारियों, भीतरी कोठरियों, और प्रायश्चित के ढकने से स्थान का नमूना, और यहोवा के भवन के आंगनों और चारों ओर की कोठरियों, और परमेश्वर के भवन के भण्डारों और पवित्र की हुई वस्तुओं के भण्डारों के जो जो नमूने ईश्वर की आत्मा की प्रेरणा से उसको मिले थे, वे सब दे दिए। मैंने यहोवा की शक्ति से जो मुझको मिली, यह सब कुछ बूझकर लिख दिया है (1 इतिहास 28:11,12,19)।

दाऊद के मन में यह इच्छा थी कि वह परमेश्वर की आराधना के लिए एक मंदिर बनाए। परंतु परमेश्वर ने उसे केवल आवश्यक तैयारियां करने के लिए कहा और उसे उसके बेटे सुलैमान के द्वारा यह मंदिर बनवाना था। यह देखना दिलचस्प होगा कि जब दाऊद उन

वस्तुओं को सुलैमान को सौंपने की तैयारी कर रहा था जो उसने मंदिर के निर्माण के लिए इकट्ठा की थीं, उस विषय में वचन क्या कहता है, "दाऊद ने सुलैमान को परमेश्वर के भवन के भण्डारों और पवित्र की हुई वस्तुओं के भण्डारों के जो जो नमूने ईश्वर की आत्मा की प्रेरणा से उसको मिले थे, वे सब दे दिए।" दाऊद ने क्या कहा था देखें। "मैंने यहोवा की शक्ति से जो मुझको मिली, यह सब कुछ बूझकर लिख दिया है।" मंदिर की रूपरेखा परमेश्वर के आत्मा ने दाऊद को दी थी। पुराने नियम में परमेश्वर के आत्मा के कार्य का उल्लेख "प्रभु के हाथ" के रूप में किया गया है। वही पवित्र आत्मा – बुद्धि का आत्मा आज भी कार्यरत है। वह हमारे मनों में अलौकिक रीति से रूपरेखाओं और योजनाओं को देने की योग्यता रखता है।

प्राकृतिक संसाधनों का उपभोग लेने की बुद्धि – किसान

कान लगाकर मेरी सुनो, ध्यान धरकर मेरा वचन सुनो। क्या हल जोतनेवाला बीज बोने के लिये लगातार जोतता रहता है? क्या वह सदा धरती को चीरता और हेंगाता रहता है? क्या वह उसको चौरस करके सौंफ को नहीं छितराता, जीरे को नहीं बखेरता और गेहूं को पांति पांति करके और जव को उसके निज स्थान पर, और कठिये गेहूं को खेत की छोर पर नहीं बोता? क्योंकि उसका परमेश्वर उसको ठीक ठीक काम करना सिखलाता और बतलाता है। दांवने की गाड़ी से तो सौंफ दाई नहीं जाती, और गाड़ी का पहिया जीरे के ऊपर नहीं चलाया जाता; परन्तु सौंफ छड़ी से, और जीरा सोंटे से झाड़ा जाता है। रोटी के अन्न पर दांय की जाती है, परन्तु कोई उसको सदा दांवता नहीं रहता; और न गाड़ी के पहिये न घोड़े उस पर चलाता है, वह उसे चूर चूर नहीं करता। यह भी सेनाओं के यहोवा की ओर से नियुक्त हुआ है, वह अद्भुत युक्तिवाला और महाबुद्धिमान है (यशायाह 28:23–29)।

उस समय की कल्पना करें जब किसानों को उनके कामों में मदद करने के लिए यंत्र नहीं थे। क्या करना चाहिए इसका ज्ञान किसान को कैसे मिला – बीज बोने के लिए जमीन कैसे तैयार करें, फसल कैसी

काटें, आदि? यह अनुच्छेद हमें सिखाता है कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने अपनी अद्‌भुत युक्ति और विशाल बुद्धि से किसानों को यह समझने की शक्ति दी कि उसे क्या करने की ज़रूरत है। दूसरे शब्दों में, प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कैसे करें यह किसानों को सिखाने वाला परमेश्वर ही था। खेती के यह पहलू आज सामान्य ज्ञान माना जाता होगा। परंतु और भी कई संसाधन हैं जो मनुष्यों के लिए उपलब्ध हैं – ऊर्जा के नये स्रोत, नये रसायन, नये वैज्ञानिक एवं तंत्र ज्ञान विषयक अनुसंधान, आदि। पवित्र आत्मा जो कि बुद्धि का आत्मा है, हमें यह खोजने और समझने हेतु परमेश्वर की युक्ति तथा बुद्धि प्रदान करता है कि किस प्रकार पृथ्वी के संसाधनों का उपयोग करें।

सीखने हेतु बुद्धि – दानिय्येल और उसके मित्र

और परमेश्वर ने उन चारों जवानों को सब शास्त्रों, और सब प्रकार की विद्याओं में बुद्धिमानी और प्रवीणता दी; और दानिय्येल सब प्रकार के दर्शन और स्वप्न के अर्थ का ज्ञानी हो गया। तब जितने दिन के बाद नबूकदनेस्सर राजा ने जवानों को भीतर ले आने की आज्ञा दी थी, उतने दिन के बीतने पर खोजों का प्रधान उन्हें उसके सामने ले गया। और राजा उनसे बातचीत करने लगा; और दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल, और अजर्याह के तुल्य उन सब में से कोई न ठहरा; इसलिये वे राजा के सम्मुख हाज़िर रहने लगे। और बुद्धि और हर प्रकार की समझ के विषय में जो कुछ राजा उनसे पूछता था उसमें वे राज्य भर के सब ज्योतिषियों और तन्त्रियों से दसगुणे निपुण ठहरते थे (दानिय्येल 1:17–20)।

तब दानिय्येल राजा के सामने भीतर बुलाया गया। राजा दानिय्येल से पूछने लगा, क्या तू वही दानिय्येल है जो मेरे पिता नबूकदनेस्सर राजा के यहूदा देश में लाए हुए यहूदी बंधुओं में से है? मैंने तेरे विषय में सुना है कि ईश्वर की आत्मा तुझ में रहती है; और प्रकाश, प्रवीणता और उत्तम बुद्धि तुझ में पाई जाती है (दानिय्येल 5:13–14)।

बुद्धि का आत्मा हमें बुद्धिमत्ता, अंतर्दृष्टि और सीखने की योग्यता प्रदान करता है। परमेश्वर ही ने दानिय्येल और उसके मित्रों को ज्ञान, समझ और सीखने की योग्यता प्रदान की थी। इस कारण वे उत्तमता हासिल कर सके। पवित्र आत्मा हमारे दिनों में भी वही कर सकता है, जो उसने उस समय किया!

सिखाने की सेवकाई में बुद्धि – यीशु

और अपने देश में आकर उनकी सभा में उन्हें ऐसा उपदेश देने लगा कि वे चकित होकर कहने लगे, "इसको यह ज्ञान और सामर्थ के काम कहां से मिले? (मत्ती 13:54)।

इस अध्याय के आरम्भ में, हम पवित्र आत्मा के उस अभिषेक के विषय में पढ़ते हैं जो प्रभु यीशु की संसारिक सेवा में उस पर था। प्रभु यीशु सिखाता, प्रचार करता, और चंगा करता फिरा। यीशु की सिखाने की सेवकाई की विशेषता बुद्धि और आश्चर्यकर्म की सामर्थ का प्रदर्शन था। हमारे दिनों में भी ऐसा ही होना चाहिए! जिन्हें सिखाने की सेवकाई के लिए बुलाया गया है, उन्हें ईश्वरीय बुद्धि और आश्चर्यकर्म के चिन्हों का प्रदर्शन करने की चाह रखना है जो आत्मा के अभिषेक से प्रवाहित होते हैं।

बुद्धि के वचन का वरदान

किन्तु सब के लाभ पहुंचाने के लिए हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है। क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा बुद्धि की बातें दी जाती हैं; और दूसरे को उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान की बातें (1 कुरिं. 12:7–8)।

कलीसिया के द्वारा पवित्र आत्मा की सेवकाई का एक पहलू आत्मा के वरदानों के द्वारा मुक्त किया जाता है। पवित्र आत्मा द्वारा दिए गए इन वरदानों में से एक है बुद्धि का वचन। एक या अधिक लोगों के लाभ के लिए विश्वासी के जीवन में ईश्वरीय बुद्धि का यह दिया जाना है। बुद्धि का वचन समस्या का समाधान करने, नेतृत्व संबंध

ी निर्णय लेने, सिखाने में सहायता करने आदि बातों के लिए दिया जाता है। परमेश्वर का आत्मा को किस विशिष्ट क्षेत्र में (सेवकाई, कारोबार, विज्ञान, पाक कला, रिश्ते, आदि) बुद्धि का वचन देना है इस विषय में कोई सीमा नहीं। हम यह जानते हैं कि परमेश्वर का आत्मा आज बुद्धि की आत्मा के रूप में कलीसिया में कार्यरत् है और हमें आग्रहपूर्ण रीति से हमारे जीवनों में उसके कार्य की चाह रखने की ज़रूरत है।

बुद्धि – उसे बेहतर रीति से जानने हेतु

कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर जो महिमा का पिता है, तुम्हें अपनी पहचान में, ज्ञान और प्रकाश की आत्मा दे (इफिसियों 1:17)।

क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने ज्ञान से परमेश्वर को न जाना... (1 कुरिं. 1:21अ)।

हमारे परमेश्वर को अधिक निकटता के साथ जानने हेतु हमें बुद्धि और प्रकाशन के आत्मा की ज़रूरत है। इस संसार की बुद्धि हमें परमेश्वर के निकट नहीं ले जा सकती। जब हम निरंतर अपने हृदयों को पवित्र आत्मा द्वारा दी जाने वाली बुद्धि और प्रकाशन के लिए अपने हृदयों को खोल देंगे, तब हम उसके ज्ञान में और गहराई से बढ़ते चले जाएंगे।

आत्मा के साथ संपर्क करने की कुंजी

पवित्र आत्मा यहां हमारे लिए है ताकि हम अपने प्रतिदिन के जीवनों के लिए उसकी भरपूरी में उसे अनुभव करें। जब हम उस पर निर्भर रहना सीखेंगे और जो कुछ वह हमें प्रदान करता है उसे प्राप्त करना सीखेंगे, तब हम हमारे जीवनों में उसके कार्य को अधिकाई से अनुभव करेंगे। वह हर एक के जीवन में भिन्न रीति से कार्य करता है, हमें किस कार्य के लिए बुलाया गया है इस आधार पर। हम में से कुछ लोगों को अगुवे के पदों पर बुलाया गया है और उस भूमिका को अदा करने हेतु उन्हें बुद्धि की आत्मा की ज़रूरत है। अन्य लोगों को और

किसी कार्य के लिए बुलाया गया है। आपके व्यवसाय/भूमिका/बुलाहट के आधार पर, आपको बुद्धि की आत्मा की ज़रूरत होगी ताकि आपको भिन्न रीति से सामर्थ प्रदान की जा सके। परंतु हर एक को परमेश्वर के आत्मा पर और जो बुद्धि वह देता है, उस पर निर्भर रहना सीखना है। हमें निरंतर उसके साथ संपर्क बनाए रखना है – उससे बातचीत करना है, उससे बुद्धि मांगना है जिसकी हमें आवश्यकता है और उसकी अगुवाई के अध ीन होना है। उसकी प्रेरणा का अनुसरण करने से हमें डरना नहीं है। यह रिश्ता समय के साथ मज़बूत होता जाता है। जितना अधि ाक आप उसे जानेंगे, उतना अधिक आप उसे अनुभव करेंगे।

आपके जीवन में बुद्धि की आत्मा के रूप में पवित्र आत्मा को पहचानें!

जब हम उस पर निर्भर रहना सीखेंगे और जो कुछ वह हमें प्रदान करता है उसे प्राप्त करना सीखेंगे, तब हम हमारे जीवनों में उसके कार्य को अधिकाई से अनुभव करेंगे। वह हर एक के जीवन में भिन्न रीति से कार्य करता है, हमें किस कार्य के लिए बुलाया गया है इस आधार पर। परंतु **हर एक को परमेश्वर के आत्मा पर और जो बुद्धि वह देता है, उस पर निर्भर रहना सीखना है।** हमें **निरंतर उसके साथ संपर्क बनाए रखना है!**

2

प्रकाशन का आत्मा

स्वर्ग में एक परमेश्वर है जो रहस्य प्रगट करता है

तब वह भेद दानिय्येल को राज के समय दर्शन के द्वारा प्रगट किया गया। सो दानिय्येल ने स्वर्ग के परमेश्वर का यह कहकर धन्यवाद किया, परमेश्वर का नाम युगानयुग धन्य है; क्योंकि बुद्धि और पराक्रम उसी के हैं। समयों और ऋतुओं को वह पलटता है; राजाओं का अस्त और उदय भी वही करता है; बुद्धिमानों को बुद्धि और समझवालों को समझ भी वही देता है; वही गूढ़ और गुप्त बातों को प्रगट करता है; वह जानता है कि अन्धियारे में क्या है, और उसके संग सदा प्रकाश बना रहता है। हे मेरे पूर्वजो के परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद और स्तुति करता हूं, क्योंकि तू ने मुझे बुद्धि और शक्ति दी है, और जिस भेद का खुलना हम लोगों ने तुझ से मांगा था, उसे तू ने मुझ पर प्रगट किया है, तू ने हम को राजा की बात बताई है। दानिय्येल ने राजा को उत्तर दिया, जो भेद राजा पूछता है, वह न तो पण्डित न तन्त्री, न ज्योतिषी, न दूसरे भावी बतानेवाले राजा को बता सकते हैं, परन्तु भेदों का प्रगटकर्त्ता परमेश्वर स्वर्ग में है; और उसी ने नबूकदनेस्सर राजा को जताया है कि अन्त के दिनों में क्या क्या होनेवाला है (दानिय्येल 2:19–23, 27,28अ)।

जब राजा नबूकदनेस्सर ने यह आज्ञा दी कि राज्य के बुद्धिमान और जादूगर उसका स्वप्न और उसका अर्थ बताएं, तब वे डर गए। कोई कैसे किसी दूसरे व्यक्ति का स्वप्न बता सकता है! लेकिन यद्यपि दानिय्येल एक जवान ही था, फिर भी परमेश्वर की विषय में कुछ बातें जानता था। दानिय्येल जानता था कि स्वर्ग में एक परमेश्वर है, बाइबल का परमेश्वर। "वही गूढ़ और गुप्त बातों को प्रगट करता है।" परमेश्वर जानता है कि "अन्धियारे में क्या है" – जो बातें मनुष्य के लिए अज्ञात हैं। अन्धकार को प्रकाशित करने वाली और गुप्त बातों को प्रकट करने

वाली ज्योति उसके साथ है। समय समय पर परमेश्वर यह ज्योति अपने लोगों को देता है और उन्हें गहरी और गुप्त बातों को देखने की योग्यता प्रदान करता है। तब दानिय्येल ने अपने मित्रों के साथ मिलकर प्रार्थना की। उसकी प्रार्थना के उत्तर के रूप में उसने दानिय्येल पर उन बातों को प्रकट किया जिन्हें उसे जानना था।

परमेश्वर गुप्त भेदों को प्रगट करता है। भेद या रहस्य ऐसी जानकारी है जो वर्तमान समय में अज्ञात है। परमेश्वर अपने भेदों को आप पर प्रगट कर सकता है। वह भूत, वर्तमान और भविष्य की बातों के विषय में जानकारी प्रगट कर सकता है। जो जानकारी परमेश्वर आप पर प्रगट करता है, वह आपके जीवन में निर्देश और परामर्श ला सकती है। वह ऐसी जानकारी हो सकता है जो व्यक्तिगत तौर पर आपको या अन्य किसी को प्रभावित कर सकती है। जैसा कि हम दानिय्येल के उदाहरण में देखते हैं, वह जानकारी परमेश्वर भविष्य में क्या करने जा रहा है इस विषय में हो सकती है। जैसा यीशु के साथ हुआ, जब उसने सामरिया में कुएं पर एक स्त्री से बातें की (यूहन्ना 4), उसी प्रकार किसी और के जीवन में सुधार और पश्चाताप लाने हेतु उसके गुप्त पापों का प्रगटीकरण आपको मिल सकता है। ये किसी और के चरित्र का प्रगटीकरण हो सकता है – वे वास्तव में कौन हैं। इसका एक उदाहरण है जब यीशु नतनएल से मिला। यीशु ने कहा, “यह सचमुच एक इस्राएली है, जिसमें कोई कपट नहीं”(यूहन्ना 1:47)। नतनएल अचम्भित रह गया। उसने पूछा, “आप मुझे कैसे जानते हैं?” परमेश्वर अन्य लोगों के विचारों और उद्देश्यों को प्रगट कर सकता है। उदाहरण के तौर पर हम पढ़ते हैं, “यीशु ने तुरन्त अपनी आत्मा में जान लिया कि वे अपने अपने मन में ऐसा विचार कर रहे हैं...” (मरकुस 2:8)। आपकी रक्षा करने हेतु परमेश्वर उन लोगों की योजनाओं और युक्तियों को आप पर प्रगट कर सकता है जिनका आपको सामना करना है। उदाहरण के लिए, भविष्यद्वक्ता एलिशा इस्राएल के राजा को आराम के राजा की युद्ध नीतियों के विषय में चेतावनी देता रहा, इस तरह विपत्ति

से बचने में उसने उसकी सहायता की। "इस कारण अराम के राजा का मन बहुत घबरा गया; सो उसने अपने कर्मचारियों को बुलाकर उनसे पूछा, क्या तुम मुझे न बताओंगे कि हम लोगों में से कौन इस्राएल के राजा की ओर का है? उसके एक कर्मचारी ने कहा, हे मेरे प्रभु! हे राजा! ऐसा नहीं, एलीशा जो इस्राएल में भविष्यद्वक्ता है, वह इस्राएल के राजा को वे बातें भी बताया करता है, जो तू ने शयन की कोठरी में बोलता है" (2 राजा 6:11,12)। परमेश्वर प्राकृतिक क्षेत्र में, उसी तरह अनदेखे आत्मिक क्षेत्र की बातों के विषय में भी प्रकाशन प्रदान कर सकता है।

इस पुस्तक में पवित्र आत्मा के उस कार्य पर ध्यान केन्द्रित किया गया है जिसके द्वारा वह हमारे जीवनों में प्रगटीकरण लाता है। हम इस प्रकाशन की ज़रूरत और प्रकाशन की आत्मा के रूप में पवित्र आत्मा के कार्य के विभिन्न पहलुओं के विषय में चर्चा करेंगे। हमारी इच्छा यह है कि आप अनुभव करेंगे कि पवित्र आत्मा आपके जीवन में ईश्वरीय प्रकाशन लाता है और आपके लिए प्रकाशन का आत्मा सिद्ध होता है।

जब आत्मा आता है

तब उन्होंने बटोरा, और जौ की पांच रोटियों के टुकड़े जो खानेवालों से बच गए थे उनकी बारह टोकरियाँ भरीं। तब जो आश्चर्यकर्म उसने कर दिखाया उसे वे लोग देखकर कहने लगे, कि वह भविष्यद्वक्ता जो जगत में आनेवाला था निश्चय यही है। यीशु यह जानकर कि वे मुझे राजा बनाने के लिए आकर पकड़ना चाहते हैं, फिर पहाड़ पर अकेला चला गया (यूहन्ना 6:13–15)।

पवित्र आत्मा प्रकाशन का आत्मा है। वह हमारे हृदयों में सत्य प्रगट करता है। वह हमसे बातें करता है और पिता के हृदय को हम पर प्रगट करता है। प्रभु यीशु जो हमें बताना चाहता है, वही पवित्र आत्मा हमसे बोलता है। वह हमें "आने वाली बातों के" विषय में भी

बताता है। यह सबकुछ कलीसिया के प्रति पवित्र आत्मा की वर्तमान सेवकाई का एक भाग है। विश्वासी होने के नाते, हमें उस प्रकाशन की चाह रखने की ज़रूरत है जो परमेश्वर का आत्मा हमारे जीवनों में लाता है। पवित्र आत्मा से बिनती करें कि आप जिन विशिष्ट बातों का सामना कर रहे हैं, उनसे सम्बंधित पिता की मनसा को वह आप पर प्रगट करे – आपका करियर, विवाह, भिन्न जगह में जाकर बसना आदि। पवित्र आत्मा से बिनती करें कि वह आपसे बातें करें और भविष्य की बातों के लिए आपको तैयार करे, उन बातों को जिन्हें पिता ने आपके लिए तैयार किया है। प्रकाशन की आत्मा के रूप में पवित्र आत्मा के समक्ष अपने जीवनों को खोल दें।

प्रकाशन की आवश्यकता

विश्वासी के जीवन में प्रकाशन या दैवी प्रगटीकरण का क्या स्थान है? हमारे पांच इन्द्रियों के माध्यम से जिन बातों को हम जानते हैं या जो बातें हमें पाठशालाओं में सिखाई जाती हैं, उनसे परे और अधिक हमें क्यों जानने की ज़रूरत है?

पिता को जानना

मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा है, और कोई पुत्र को नहीं जानता, केवल पिता; और कोई पिता को नहीं जानता, केवल पुत्र; और वह जिस पर पुत्र उसे प्रगट करना चाहे (मत्ती 11:27)।

कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर जो महिमा का पिता है, तुम्हें अपनी पहचान में, ज्ञान और प्रकाश की आत्मा दे (इफिसियों 1:17)।

पिता को कोई नहीं जान सकता उन लोगों को छोड़ जिन पर प्रभु यीशु उसे प्रगट करता है। परमेश्वर पिता के साथ नज़दीकी किसी बुद्धिमानीपूर्ण वैज्ञानिक अनुसंधान का परिणाम नहीं है। यह गहन बौद्धिक परीक्षा का फल नहीं है। यह किसी धार्मिक सहभागिता का भी

फल नहीं है। हम पिता को जानते हैं क्योंकि प्रभु यीशु अपने आत्मा के द्वारा उसे हम पर प्रगट करता है। हमारे पास परमेश्वर का ज्ञान हो सकता है और यह ज्ञान यथार्थ हो सकता है। परंतु यह उसे निकटता से जानने के बराबर नहीं है। परमेश्वर के विषय में ज्ञान शिक्षा के द्वारा भी हासिल किया जा सकता है। परंतु उसे जानना प्रगटीकरण के द्वारा आता है।

पुत्र को जानना

उसने उनसे कहा, "परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?" शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "आप जीवित परमेश्वर के पुत्र मसीह हैं।" यीशु ने उसको उत्तर दिया, "हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है! क्योंकि मांस और लोहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है (मत्ती 16:15–17)।

"जिसके पास मेरी आज्ञा है, और वह उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम रखता है; और जो मुझ से प्रेम रखता है, उससे मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उससे प्रेम रखूंगा, और अपने आपको उस पर प्रगट करूंगा।" (यूहन्ना 14:21)।

हम प्रकाशन के द्वारा प्रभु यीशु को जानते हैं (इफिसियों 4:18)। कई धर्मी लोगों के समान यीशु की संसारिक सेवकाई के दौरान, हमारे समय के कई शिक्षित लोग प्रभु यीशु मसीह के ईश्वरत्व को नहीं समझ सकते। वे मसीह का ठट्ठा करते हैं और अपनी संसारिक शिक्षा पर घमंड करते हैं। वे नहीं समझते की वे कितने मूर्ख हैं, न ही वे अपनी अज्ञानता के प्रमाण को समझ पाते हैं। उनके हृदय कठोर बन गए हैं इस कारण वे उस प्रकटीकरण या प्रकाशन को नहीं पा सकते, जो परमेश्वर का आत्मा उन्हें देना चाहता है। इसलिए उनके अज्ञान ने उन्हें परमेश्वर के जीवन से दूर कर दिया है (इफिसियों 4:18)। जब हम बच्चों के समान दीन बन जाते हैं, तब हम परमेश्वर के आत्मा से प्रकटीकरण पा सकते हैं।

प्रभु यीशु के व्यक्तिगत प्रकाशन में क्रमशः बढ़ने हेतु, हमें उसके प्रति प्रेम और आज्ञाकारिता में चलना है। यीशु ने कहा की वह खुद को उन लोगों पर प्रगट करेगा, उसकी आज्ञाओं को मानेंगे। जितना उसने खुद को हम पर प्रगट किया, उससे अधिक वह खुद को दूसरों पर प्रगट नहीं करेगा। जितना हम उसे व्यक्तिगत रीति से जानते हैं, उतनाही हम उसे दूसरों पर प्रगट कर सकते हैं।

परमेश्वर के कामों को समझना

तब वह उन नगरों को उलाहना देने लगा, जिनमें उसने बहुतेरे सामर्थ के काम किए थे, क्योंकि उन्होंने अपना मन नहीं फिराया था। उसी समय यीशु ने कहा, "हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं आपका धन्यवाद करता हूं, कि आपने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा और बालकों पर प्रगट किया है। हां, हे पिता, क्योंकि आपको यही अच्छा लगा (मत्ती 11:20,25,26)।

जब उन्होंने पतरस और यूहन्ना का हियाव देखा, और यह जाना कि ये अनपढ़ और साधारण मनुष्य हैं, तो अचम्भा किया; फिर उनको पहचाना, कि ये यीशु के साथ रहे हैं। और उस मनुष्य को जो अच्छा हुआ था, उनके साथ खड़े देखकर, वे विरोध में कुछ न कह सके (प्रे.काम 4:13,14)।

ज्ञानी और समझदार लोग उन आश्चर्यकर्मों को नहीं समझ सकते थे जो यीशु ने उसकी संसारिक सेवा के दौरान किए। वे अपने तर्कों से परमेश्वर के सामर्थी कामों को नकराने की कोशिश करते थे, "शायद यह धोखा है; शैतान यह शैतान का काम है। यह परमेश्वर का काम नहीं है।" लेकिन पतरस और यूहन्ना के समान अशिक्षित और साधारण लोग जो 'छोटे बच्चों के समान' यीशु के पीछे चल पड़े थे, उन आश्चर्यकर्मों को समझ सकते थे। उन लोगों पर यह प्रगट किया गया था कि ये परमेश्वर के सच्चे काम थे। उन्होंने यह प्रकाशन पाया था कि यीशु के नाम में और सरल विश्वास के द्वारा वे मसीह के कार्य कर सकते थे। वस्तुतः मसीह के पुन्रुत्थान के बाद और स्वर्गारोहण के

उपरान्त, उन्होंने चंगाई प्रदान करना और परमेश्वर की सामर्थ का प्रदर्शन करना जारी रखा।

दुख की बात है कि आज कई "बुद्धिमान और ज्ञानी" मसीही ईश्वरविज्ञानी, प्रचारक और शिक्षक परमेश्वर के कामों को नहीं समझ पाते हैं। कई लोग अपना अधिकतर समय और प्रयास वर्तमान समय में होने वाले चिन्ह और चमत्कारों के विषय में विवाद करने में व्यतीत करते हैं। लेकिन कई "अशिक्षित और असाधारण" स्त्री और पुरुष अपनी सेवकाई में परमेश्वर के सामर्थी कामों को अनुभव कर रहे हैं। अलौकिक बेदारी का स्वागत करने हेतु प्रकाशन की ज़रूरत होती है।

राज्य के भेदों को समझना

और अब कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर रखा हुआ है, इसलिए जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में झोंका जाता है। मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे बाद आनेवाला है, वह मुझ से सामर्थी है; मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं हूं, वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। उसका सूप उसके हाथ में है, और वह अपना खलिहान अच्छी रीति से साफ करेगा, और अपने गेहूं को तो खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं। उस समय यीशु गलील से यरदन नदी के किनारे पर यूहन्ना के पास उससे बपतिस्मा लेने आया। परन्तु यूहन्ना यह कहकर उसे रोकने लगा कि मुझे आपके हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और आप मेरे पास आए हैं? यीशु ने उसको यह उत्तर दिया, "अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है।" तब यूहन्ना ने उसकी बात मान ली। और जब यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, तब देखो, उसके लिए आकाश खुल गया, और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर के समान उतरते और अपने ऊपर आते देखा, (मत्ती 3:10–16)।

प्रकाशन पश्चाताप की ओर ले जाता है। पश्चाताप का परिणाम उद्धार होता है (संपूर्ण व्यक्तित्व की चंगाई)। प्रकाशन का अर्थ देखने हेतु आत्मिक आंखों का खुलना, सुनने हेतु आत्मिक कानों का खुलना और आत्मिक सच्चाई को समझने हेतु आत्मिक हृदय का खोला जाना। इसके द्वारा हम सत्य को अपनाने की ज़रूरत को हम पहचानते हैं। जब अपनी मूर्खता त्याग देते हैं, और फिर सच्चाई को गले लगाते हैं, तब यह पश्चाताप है। तब परमेश्वर चंगाई प्रदान करता है। (यद्यपि ऐसा भी समय होता है जब परमेश्वर लोगों की आंखों को खोलने हेतु पहले सामर्थ का काम करता है और बाद में उन्हें पश्चाताप की ओर ले आता है।)

जो प्रकाशन परमेश्वर का आत्मा ले आता है, उसी के द्वारा हम परमेश्वर के राज्य के भेदों को समझते हैं। जब पवित्र आत्मा हमारे हृदयों और मनों पर अपना प्रकाश उण्डेलता है, तब हम आत्मिक सिद्धान्तों को और परमेश्वर के मार्गों को समझने लगते हैं। परमेश्वर के लोग होने के नाते, आज हमें केवल शिक्षा की नहीं, परंतु प्रकाशन की ज़रूरत है। हमें आत्मिक बातों में शिक्षा की ज़रूरत है, परंतु उससे अधिक महत्वपूर्ण, हमें प्रकाशन की ज़रूरत है ताकि हम उस ज्ञान को समझ सकें जो मसीह की देह को प्रकाशन का आत्म उपलब्ध कराया गया है।

पवित्र आत्मा प्रकाशन का आत्मा है

- वह हमसे बातें करता है और पिता के हृदय को हम पर प्रगट करता है। पवित्र आत्मा हमसे वही बातें बोलता है जो प्रभु यीशु हमें बताना चाहता है।
- वह "आने वाली बातों को" हम पर प्रगट करेगा।
- विश्वासी होने के नाते, हमें उस प्रकाशन की इच्छा रखना है जो परमेश्वर के आज्ञा ने हमारे जीवनों में लाया है।
- कोई भी पिता को नहीं जान सकता, उसे छोड़ जिस प्रभु यीशु पिता को प्रगट करता है। पिता के साथ निकटता किसी वैज्ञानिक अनुसंधान का फल नहीं है।
- जब हम खुद को छोटे बच्चों के समान नम्र बनाते हैं, तब हम परमेश्वर के आत्मा से प्रकाशन पाने योग्य बनते हैं।
- यीशु ने कहा कि वह खुद को उन लोगों पर प्रगट करेगा जो उसकी आज्ञाओं को मानते हैं।
- कई "अशिक्षित और साधारण" स्त्री और पुरुष अपनी सेवकाई में परमेश्वर के सामर्थी कामों को अनुभव कर सकते हैं। परमेश्वर की अलौकिक बेदारी का स्वागत करने हेतु प्रकाशन की ज़रूरत होती है।
- प्रकाशन का अर्थ हमारी आत्मिक आंखों का खुल जाना है ताकि हम देख सकें, हमारे आत्मिक कानों का ुलना है ताकि हम सुन सकें और हमारे आत्मिक हृदयों का खुलना है ताकि हम आत्मिक सच्चाइयों को समझ सकें।

3

सामर्थ का आत्मा

अंग्रेजी में एक गीत गाया करते थे, जिसका यहां अनुवाद किया गया है:

"दुनिया में सर्वत्र आत्मा मंडरा रहा है,
दुनिया में सर्वत्र।

जैसा भविष्यद्वक्ताओं ने कहा की होगा,
दुनिया में सर्वत्र।

प्रभु महिमा का
एक सामर्थी प्रकाशन है।

जिस प्रकार जल सागर को भर देता है। यह कितना सच है! हाल ही के दिनों में, विश्व भर की कलीसिया परमेश्वर के आत्मा के चलन में लगातार बढ़ौतरी को देख रही है। मेन लाईन कलीसियाओं में भी परमेश्वर के आत्मा कीसामर्थी बेदारी आ रही है। वर्तमान दिन के पवित्र आत्मा के इस कार्य की एक विशेषता है, चंगाई, आश्चर्यकर्म, और दुष्टात्मा के कामों का पराजय आदि के द्वारा उसके सामर्थ के सामर्थी प्रदर्शन की बढ़ती हुई अपेक्षा।

इस अध्याय में हम पवित्र आत्मा के कार्य के इस विशिष्ट पहलु का अवलोकन करना चाहेंगे। हमें भरोसा है कि इसके द्वारा आप सामर्थ के आत्मा के रूप में पवित्र आत्मा को पहचान पाएंगे। इस अध्ययन के द्वारा आपको प्रोत्साहन प्राप्त हो ताकि आप सच्चे हृदय से उसकी सामर्थ के सामर्थी प्रदर्शन के द्वारा उसकी उपस्थिति के प्रकटीकरण की सच्चे हृदय से इच्छा रखने पाएं।

- पवित्र आत्मा की सामर्थ से, गाठें (टयूमर) हट जाती हैं, नये अंग उत्पन्न होते हैं, पुराने अंगों के स्थान पर नये अंग उत्पन्न होते हैं, रक्त प्रणाली स्वच्छ होती है, रोग का हर एक लक्षण पूरी रीति से दूर हो जाता है आदि।
- पवित्र आत्मा संपूर्ण गांव या शहर में "आत्मिक वातावरण" को बदल सकता है और पश्चाताप उत्पन्न कर लोगों को प्रभु यीशु की ओर ला सकता है, और आश्चर्यकर्म और चंगाई के माध्यम से अपनी उपस्थिति का सामर्थी प्रदर्शन मुक्त कर सकता है।
- परमेश्वर के आत्मा की सामर्थ भौतिक वस्तु में भी बसने लगती है, जैसे कपड़े/या वस्त्र का टुकड़ा।

परमेश्वर का आत्मा – सामर्थ का आत्मा

तब यिशै के ठूंठ में से एक डाली फूट निकलेगी और उसकी जड़ में से एक शाखा निकलकर फलवन्त होगी। और यहोवा की आत्मा, बुद्धि और समझ की आत्मा, युक्ति और पराक्रम की आत्मा, और ज्ञान और यहोवा के भय की आत्मा उस पर ठहरी रहेगी। (यशायाह 11:1,2)।

पवित्र आत्मा के कार्य के विभिन्न पहलुओं के मध्य, एक है "सामर्थ का आत्मा" जैसा कि हम यशायाह 11:1,2 में पाते हैं। यह पवित्र आत्मा को ऐसे आत्मा के रूप में प्रगट करता है जो बल, सामर्थ, शक्ति और ज़ोर से परिपूर्ण है। यह पवित्र आत्मा के ऐसे आत्मा के रूप में प्रगट करता है जो महान कार्य करने योग्य है। वह सामर्थ का आत्मा है। वह घटनाओं को घटित करने की योग्यता रखता है।

पवित्र आत्मा आज भी सामर्थ की आत्मा के रूप में कार्यरत् है। उसने अपनी कोई सामर्थ नहीं खोई है, क्योंकि वह नहीं बदलता। परमेश्वर का आत्मा अपनी सामर्थ को लोगों, स्थानों और वस्तुओं की ओर बढ़ाता है। दूसरे शब्दों में, लोग (व्यक्ति और समूह), स्थान (संपूर्ण भौगोलिक क्षेत्र – शहर, गांव, सभा का स्थान) और स्वाभाविक, भौतिक

वस्तु (कपड़े का टुकड़ा, मौसम आदि) परमेश्वर की आत्मा की सामर्थ से प्रभावित हो सकते हैं और बदल सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, परमेश्वर का आत्मा व्यक्ति के भौतिक शरीर पर मंडरा सकता है और क्षण मात्र में किसी भी प्रकार की बीमारियों और रोगों को दूर कर सकता है। क्षण मात्र में, पवित्र आत्मा की सामर्थ से, गाठें (टयूमर) हट जाती हैं, नये अंग उत्पन्न होते हैं, पुराने अंगों के स्थान पर नये अंग उत्पन्न होते हैं, रक्त प्रणाली स्वच्छ होती है, रोग का हर एक लक्षण पूरी रीति से दूर हो जाता है आदि। परमेश्वर का आत्मा लोगों के समूह पर मंडरा सकता है, चाहे थोड़े लोग हों या कई हज़ारों और कईयों को तुरंत छूकर उनके जीवनों में आश्चर्यकर्म कर सकता है। पवित्र आत्मा संपूर्ण गांव या शहर में "आत्मिक वातावरण" को बदल सकता है और पश्चाताप उत्पन्न कर लोगों को प्रभु यीशु की ओर ला सकता है, और आश्चर्यकर्म और चंगाई के माध्यम से अपनी उपस्थिति का सामर्थी प्रदर्शन मुक्त कर सकता है। परमेश्वर के आत्मा की सामर्थ भौतिक वस्तु में भी बसने लगती है, जैसे कपड़े/या वस्त्र का टुकड़ा। कुछ समय के लिए यह कपड़ा/वस्त्र आत्मा की सामर्थ का वाहक/पात्र बनता है। यह सामर्थ बहकर अन्य वस्तुओं को प्रभावित कर सकती है – उदाहरण के तौर पर, उस वस्त्र/कपड़े के संपर्क में आने पर बीमार लोग तुरंत चंगे हो सकते हैं। परमेश्वर का आत्मा मौसम के तत्व पर मंडरा सकता है – हवा, बादल आदि और उन्हें बदल सकता है।

उत्पत्ति के कार्य में सामर्थ का आत्मा

आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की। और पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी; और गहरे जल के ऊपर अन्धियारा था : तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डलाता था। तब परमेश्वर ने कहा, "उजियाला हो!" तो उजियाला हो गया (उत्पत्ति 1:1–3)।

फिर तू अपनी ओर से सांस भेजता है, और वे सिरजे जाते हैं, और तू धरती को नया कर देता है (भजन 104:30)।

जब परमेश्वर का आत्मा जल राशि पर मंडरा रहा था, तब परमेश्वर ने अपना वचन कहा। परमेश्वर के कार्य का क्रम महत्वपूर्ण है। सबसे पहले परमेश्वर का आत्मा एक विशाल विस्तार को ढांप देता है। फिर उस क्षेत्र पर परमेश्वर का वचन बोला जाता है। और फिर कुछ घटने लगता है। इससे यह ज्ञात होता है कि परमेश्वर का आत्मा त्रिएक परमेश्वर के उद्देश्यों को कार्यान्वित करता है। वही है जो उत्पन्न करता है, बदलता है, जो आकार देता है और प्राकृतिक संसार को कहे गए वचन के अनुसार आकार देता और बनाता है।

भौतिक बल प्रदान करने वाला सामर्थ का आत्मा

तब यहोवा का आत्मा उस पर बल से उतरा, और यद्यपि उसके हाथ में कुछ न था, तौभी उस ने उसको ऐसा फाउ डाला जैसा कोई बकरी का बच्चा फाडे। अपना यह काम उसने अपने पिता वा माता को न बतलाया। तब उसका क्रोध ा भड़का, और वह अपने पिता के घर गया (न्यायियों 14:6,19अ)।

तब वे उसको दो नई रस्सियों से बान्धकर उस चट्टान में से ले गए। वह लही तक आ गया था, कि पलिश्ती उसको देखकर ललकारने लगे; तब यहोवा का आत्मा उस पर बल से उतरा, और उसकी बांहों की रस्सियां आग में जले हुए सन के समान हो गई, और उसके हाथों के बन्धन मानों गलकर टूट पड़े। तब उसको गदहे के जबड़े की एक नई हड्डी मिली, और उसने हाथ बढ़ा उसे लेकर एक हजार पुरुषों को मार डाला (न्यायियों 15:13ब–15)।

एलिय्याह ने कहा, अहाब के पास जाकर कह, कि रथ जुतवा कर नीचे जा, कहीं ऐसा न हो कि तू वर्षा के कारण रुक जाए। थोड़ी ही देर में आकाश वायु से उड़ाई हुई घटाओं, और आन्धी से काला हो गया और भारी वर्षा होने लगी; और अहाब सवार होकर यिज्रैल को चला। तब यहोवा की शक्ति एलिय्याह पर ऐसी हुई, कि वह कमर बान्धकर अहाब के आगे आगे यिज्रैल तक दौड़ता चला गया (1 राजा 18:44ब–46)।

उपर्युक्त सभी वचन स्पष्ट रूप से यह दर्शाते हैं कि परमेश्वर का आत्मा लोगों पर मंडरा सकता है और उन्हें अलौकिक भौतिक बल और योग्यता प्रदान कर सकता है। शिमशोन ने अपने हाथों से सिंह को मारा और कई पुरुषों पर जय पाई और जिन रस्सियों से वह बांधा गया था, उन्हें उसने तोड़ दिया। ये सारे पराक्रम के काम इसलिए संभव हो पाए क्योंकि "परमेश्वर का आत्मा उस पर बल से उतरा।" उसी तरह उस व्यक्ति की कल्पना करें जो घोड़ों के रथों से अधिक तेज़ी से दौड़ता हुआ जाता है, स्वाभाविक दृष्टि से यह संभव नहीं है। परंतु प्रभु का आत्मा बल से उस पर उतर आया, उस 'प्रभु के आत्मा' की वजह से एलिय्याह यह कर सका। पवित्र आत्मा बदला नहीं है। जो कुछ उसने पिछले दिनों में किया, वही आज भी करने की योग्यता वह रखता है। क्योंकि समय बदल गया है, इसलिए हो सकता है कि हमें ऐसी परिस्थितियों में नहीं रखा जाएगा, जहां पर हमें सिंह को मारने हेतु अलौकिक बल की आवश्यकता हो या घोड़ों वाले रथों से आगे दौड़ लगाने की। लेकिन ऐसे कुछ क्षेत्र हैं जिसमें हम हमारे भौतिक शरीरों पर परमेश्वर के आत्मा की अलौकिक सामर्थ को अनुभव कर सकते हैं। उदाहरण स्वरूप, कल्पना करें कि आपने सारा दिन काम में बिताया और ऐसी स्थिति आ गई कि आपको किसी व्यक्ति के लिए प्रार्थना करना है। आप शारीरिक और मानसिक रूप से थके हुए हैं। परंतु उसी क्षण, परमेश्वर का आत्मा अलौकिक रीति से आपके शरीर और मन को बल प्रदान कर सकता है ताकि आप जाकर ज़रूरतमंद लोगों की सेवा करने के कार्य को पूरा कर सकें (रोमियों 8:11 भी देखें)।

विरोध को मिटाने वाला सामर्थ का आत्मा

तब उसने मुझे उत्तर देकर कहा, जरुब्बाबेल के लिए यहोवा का वचन है: न तो बल से, और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा होगा, मुझ सेनाओ के यहोवा का यही वचन है। हे बड़े पहाड़, तू क्या है? जरुब्बाबेल के सामने तू मैदान हो जाएगा; और वह चोटी का पत्थर यह पुकारते हुए आएगा, उस पर अनुग्रह हो, अनुग्रह हो! (जकर्याह 4:6,7)।

तब पश्चिम की ओर लोग यहोवा के नाम का, और पूर्व की ओर उसकी महिमा का भय मानेंगे; क्योंकि जब शत्रु महानद की नाईं चढ़ाई करेंगे तब यहोवा का आत्मा उसके विरूद्ध झण्डा खड़ा करेगा। (यशायाह 59:19)।

जरूब्बाबेल और यहोशू के नेतृत्व में जो यहूदी अपनी मातृभूमि को लौटे थे, उनके सामने मंदिर के पुनर्निमाण का कार्य था। परंतु उन्हें पड़ोसी सामरियों से विरोध का सामना करना पड़ा जो उस कार्य पर रोक लगाने में सफल हुआ। करीब 12 वर्षों के बाद, जकर्याह और हाग्गै जैसे भविष्यद्वक्ताओं से प्रोत्साहन पाकर, लोग फिर से मंदिर के निर्माण कार्य के को आरंभ करने हेतु तैयार हो गए। जरूब्बाबेल जो कि यहूदा का अधिपति था, इस कार्य के लिए मुख्य रूप से ज़िम्मेदार था।

जकर्याह 4:6,7 में स्पष्ट रूप से यह प्रगट किया गया है कि परमेश्वर का कार्य परमेश्वर के आत्मा की सामर्थ से पूरा होगा। हर विरोध का पहाड़ "समतल भूमि" बन जाएगा। जब किसी स्त्री या पुरुष को विशिष्ट कार्य को पूरा करने हेतु परमेश्वर द्वारा भेजा जाता है और पवित्र आत्मा द्वारा अभिषेक किया जाता है, तब कोई विरोध या शत्रु का कोई कार्य बच नहीं पाता। वह कार्य आत्मा की सामर्थ से पूरा होता है।

इससे यह भी मालूम पड़ता है कि परमेश्वर की आत्मा से परिपूर्ण होना कितना महत्वपूर्ण है। किसी प्रकार का धार्मिक प्रयास नहीं, परंतु अभिषेक ही है जो सताव के विरोध में खड़ा रह पाएगा। अभिषिक्त कलीसिया ही टिक पाएगी।

परम प्रधान परमेश्वर की सामर्थ

स्वर्गदूत ने उससे कहा, हे मरियम, भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है। और देख, तू गर्भवती होगी, और तुझे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम 'यीशु' रखना। वह महान होगा और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसको देगा। और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा;

और उसके राज्य का अन्त न होगा। मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, यह कैसे होगा? मैं तो पुरुष को जानती ही नहीं। स्वर्गदूत ने उसको उत्तर दिया, पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी, इसलिए वह पवित्र जो उत्पन्न होने वाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा (लूका 1:30–35)।

सृजन या उत्पत्ति के चमत्कार के माध्यम से ही देहधारण संभव हुआ जो परमेश्वर के आत्मा ने मरियम के गर्भ में प्रगट किया था। जो स्वाभाविक रूप से असम्भव था, वह परमप्रधान परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा सम्भव हुआ। यदि पवित्र आत्मा मरियम के भौतिक शरीर में ऐसे अलौकिक कार्य को कर सका और वह परमेश्वर होने के कारण बदला नहीं है (मलाकी 3:6), तो हम यह क्यों समझे कि आज के समय में लोगों के शरीरों में चंगाई के कार्य और सृजनात्मक आश्चर्यकर्म करना परमेश्वर के लिए असम्भव है? हमें ऐसा नहीं सोचना चाहिए! पवित्र आत्मा आज भी लोगों पर आकर उनके भौतिक शरीरों में चंगाई के आश्चर्यकर्मों को करता है!

पवित्र आत्मा और सामर्थ से अभिषिक्त

फिर यीशु आत्मा की सामर्थ से भरा हुआ गलील को लौटा, और उसकी चर्चा आस पास के सारे देश में फैल गई। प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिए कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिए भेजा है कि बन्धुओं को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूं और कुचले हुओं को छुड़ाऊं; और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूं (लूका 4:14,18,19)।

कि परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ से अभिषेक किया। वह भलाई करता, और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा; क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था (प्रे. काम 10:38)।

प्रभु यीशु के देहधारण में, वचन जो परमेश्वर था, शरीर बन गया। यीशु ने अपनी संसारिक सेवकाई के दौरान अपनी सर्वशक्तिमानता, सर्वत्रता और सर्वज्ञता की ईश्वरीय सामर्थ को जानबूझकर हटाकर रख दिया (देखें फिलिप्पियों 2:6–8, यूहन्ना 17:5)। आपको और मुझको जैसे चलना चाहिए, वैसे वह चला (इब्रानियों 2:14,17)। उसकी सेवकाई पवित्र आत्मा के अभिषेक – उपस्थिति और सामर्थ का फल था। जिन आश्चर्यकर्मों को उसने किया, वे उसके जीवन के द्वारा कार्यरत् परमेश्वर की सामर्थ की वजह से थे। यह समझना हमारे लिए क्यों महत्वपूर्ण है? क्योंकि जब हम इस बात को समझते हैं, तब यीशु ने यूहन्ना 14:12 में जो कुछ कहा वह हम समझ सकते हैं, "मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, वरन् इनसे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं।" "जो" का मतलब आपके और मेरे समान लोग। उसमें हमारे विश्वास के द्वारा यीशु ने कहा कि जो कुछ उसने किया वह हम करेंगे। हम सुसमाचार सुनाएंगे, टूटे हुए दिलों को चंगा करेंगे, बीमारों को चंगाई प्रदान करेंगे, दुष्टात्माओं को निकालेंगे और परमेश्वर के सामर्थी कामों का प्रदर्शन करेंगे। यह कैसे सम्भव होगा? जिस प्रकार यीशु ने आत्मा की सामर्थ से यह किया, उसी तरह। जब यीशु पिता के पास स्वर्ग पर चढ़ गया, तब उसने अपने आत्मा को भेजा ताकि वह उन लोगों में और उनके लोगों के द्वारा कार्य करें जो उसमें विश्वास करेंगे। पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा, हम विश्वासी उन कामों को कर सकते हैं, जो यीशु ने किए।

सभी विश्वासियों के लिए आत्मा की सामर्थ

और उसने उनसे मिलकर उन्हें आज्ञा दी, कि यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो, जिसकी चर्चा तुम मुझ से सुन चुके हो। परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे (प्रे. काम 1:4,8)।

पतरस ने उनसे कहा, "मन फिराओ, और तुममें से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर दूर के लोगों के लिए भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा (प्रे. काम 2:38,39)।

यीशु की अंतिम आज्ञाओं में से एक जो उसने अपने शिष्यों को दी, वह यह थी कि वे "मेरे पिता ने प्रतिज्ञा किए हुए वरदान" की बाट जोहते रहें। पिता ने प्रतिज्ञा की थी कि वह सभी प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलेगा (योएल 2:28,29)। इस प्रतिज्ञा के पूरे होने का समय अंत में आ चुका था और यीशु अपने शिष्यों को इस समय के लिए तैयार कर रहा था। उसने कहा कि जब आत्मा उन पर आएगा, तब वे सामर्थ पाएंगे। ये परमेश्वर की सामर्थ – ईश्वरीय सामर्थ थी, संसारिक सामर्थ नहीं। फिर अंततः यह पूरा हुआ। पिन्तेकुस्त के दिन "वह प्रतिज्ञा" उण्डेली गई। दर्शकों को उस परिदृश्य के विषय में समझाने के बाद, प्रेरित पौलुस ने उन के समक्ष इस प्रतिज्ञा की पेशकश की। उसने कहा "यह प्रतिज्ञा" केवल उनके लिए नहीं, उनके बच्चों के लिए, जो दूर है उनके लिए, और उन सभी लोगों के लिए है "जिन्हें हमारा परमेश्वर बुलाएगा।" दूसरे शब्दों में, जब तक परमेश्वर लोगों को उस राज्य में बुलाएगा, तब तक आने वाले सभी लोगों के लिए "यह प्रतिज्ञा" उपलब्ध रहेगी। "यह प्रतिज्ञा" – आत्मा का उण्डेला जाना सभी विश्वासियों के उपलब्ध है। हर एक विश्वासी आत्मा के उण्डेले जाने का और उसके या उसके जीवन के द्वारा परमेश्वर के आत्मा की सामर्थ को अनुभव कर सकता है!

प्रारंभिक कलीसिया में आत्मा की सामर्थ

प्रेरितों के काम की पुस्तक प्रारंभिक कलीसिया के माध्यम से पवित्र आत्मा के कार्य के विषय में लिखती है। हम लोगों की चंगाई के विषय में पढ़ते हैं – लंगड़े चलते हैं, मृतक जिंदा होते हैं, दुष्टात्माएं निकाली जाती हैं आदि। परमेश्वर की सामर्थ जो प्रगट हुई, इतनी प्रबल थी कि

वे उन रूमालों के द्वारा भी चंगे हुए जिन पर प्रार्थना की गई थी और पतरस की उन पर छांव पड़ने पर भी उन्होंने चंगाई पाई। हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर के आत्मा से झूठ बोलने की वजह से लोग गिरकर मर गए, परमेश्वर के सेवकों का विरोध करने के कारण एक व्यक्ति अंधा हो गया आदि। प्रारंभिक कलीसिया मात्र सैद्धांतिक कलीसिया नहीं थी, जो केवल परमेश्वर के विषय में बोलती रहे। नहीं! प्रारंभिक कलीसिया परमेश्वर को अपने मध्य अनुभव करती थी। प्रारंभिक कलीसिया ने खोए हुए संसार को परमेश्वर की सामर्थ प्रगट की। यह केवल आत्मा की सामर्थ के द्वारा संभव हुआ जो वहां कार्य कर रहा था। वर्तमान कलीसिया को इससे भिन्न नहीं होना चाहिए। हमें परमेश्वर की आत्मा को अनुमति देना चाहिए कि वह अबाधित रूप से हमारे मध्य में संचार करे। कितने शर्म की बात है कि कई बार हम अपने वक्तृत्वपूर्ण उपदेशों का और कार्यक्रमों का प्रदर्शन करते हैं और परमेश्वर के आत्मा को उसकी सामर्थ प्रगट करने के लिए जगह नहीं देते।

वचन की सेवकाई में आत्मा की सामर्थ

और मेरे वचन, और मेरे प्रचार में ज्ञान की लुभानेवाली बातें नहीं, परन्तु आत्मा और सामर्थ का प्रमाण था, इसलिए कि तुम्हारा विश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं, परन्तु परमेश्वर की सामर्थ पर निर्भर हो। (1 कुरिं. 2:4,5)।

क्योंकि परमेश्वर का राज्य बातों में नहीं, परंतु सामर्थ में है (1 कुरिं. 4:20)।

वचन की सेवकाई बौद्धिक अभ्यास नहीं होना चाहिए। यह एक आत्मिक कार्य है जो परमेश्वर के आत्मा की सामर्थ से पूरा किया जाना चाहिए। "बुद्धिमानीपूर्ण और समझानेवाले शब्द" में गलत कुछ नहीं है, क्योंकि पौलुस ने कहा है कि जो परिपक्व लोग थे उनके मध्य उसने बुद्धि की बात कही, यद्यपि उसने यह स्पष्ट किया कि उसने केवल परमेश्वर की बुद्धि से बात की, इस युग की बुद्धि से नहीं (1 कुरिं.

2:6,7)। परंतु वचन के सेवकों को "बुद्धिमानीपूर्ण और समझानेवाले शब्दों" पर निर्भर नहीं रहना चाहिए, परंतु आत्मा की सामर्थ के कार्य और प्रदर्शन पर निर्भर रहना चाहिए (1 थिस्सल. 1:5 भी देखें)। यह देखकर दुख होता है कि कई स्थानों में, कलीसिया ने परमेश्वर के आत्मा की सामर्थ से बढ़कर बौद्धिकता को स्थान दिया है। कई कलीसियाओं में, आत्मा से अभिषिक्त होने के बजाए बुद्धिमान होने का प्रचलन है। यह कितनी शर्मनाक बात है! परमेश्वर के वचन के सेवकों के लिए परमेश्वर का मूल उद्देश्य यह था कि वे आत्मा की सामर्थ का प्रदर्शन करें, इसका यह कितने विपरीत है! परमेश्वर के वचन के सेवक होने के नाते, हमें यह स्मरण रखना है कि "परमेश्वर का राज्य बातों में नहीं, परंतु सामर्थ में है" (1 कुरिं. 4:20)।

आत्मा की सामर्थ और उसके वरदान

1 कुरिं. 12:7–11 में सूचिबद्ध किए गए आत्मा के नौ वरदानों में, कम से कम तीन वरदान ऐसे हैं, जो परमेश्वर की सामर्थ के सामर्थी प्रदर्शन का परिणाम हैं। विश्वास का वरदान, चंगाई का वरदान, और सामर्थ के कामों को करने का वरदान, पवित्र आत्मा के सामर्थ के आत्मा के रूप में कार्य करने का परिणाम हैं। हमें निरंतर आत्मा के इन प्रकटीकरणों की चाह रखना है।

सामर्थ का आत्मा और सेवकाई के पद

प्रेरित के लक्षण भी तुम्हारे बीच सब प्रकार के धीरज सहित चिन्हों, और अद्भुत कामों, और सामर्थ के कामों से दिखाए गए (2 कुरिं. 12:12)।

कि परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ से अभिषेक किया। वह भलाई करता, और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा; क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था (प्रे. काम 10:38)।

सामर्थ का आत्मा विशेष रूप से उन लोगों पर होता है जो सेवकाई के पदों के लिए (प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, पासबान, शिक्षक, और सुसमाचार प्रचारक) बुलाए जाते हैं, विशेषकर उन लोगों पर जो प्रेरित की सेवकाई में होते हैं। प्रेरिताई की सेवकाई की विशेषता अनोखे चिन्ह, अद्‌भुत काम और आश्चर्यकर्म होते हैं जो सामर्थ की आत्मा के विशेष अभिषेक द्वारा प्राप्त होते हैं।

सामर्थ का आत्मा और आप

सामर्थ का आत्मा हर विश्वासी में और उसके द्वारा कार्य करना चाहता है, हम में से हर एक की मदद करना चाहता है कि हम वह सबकुछ बनें जिसकी योजना परमेश्वर ने बनाई है, और उसे पूरा करें जिसकी योजना उसने तैयार की है। परंतु वह केवल उसी प्रमाण में कार्य कर सकता है और करेगा, जिसकी हम उसे अनुमति देंगे। हम आपको प्रोत्साहन देना चाहते हैं कि आप इच्छा रखेंगे और परमेश्वर के आत्मा को अनुमति देंगे कि वह आपमें और आपके द्वारा सामर्थ का आत्मा बने। ताकि संसार यह जानें कि यीशु ही सब का प्रभु है!

- परमेश्वर का आत्मा त्रिएक परमेश्वर के उद्देश्यों को कार्यान्वित करता है। वही है जो उत्पन्न करता है, बदलता है, जो आकार देता है और प्राकृतिक संसार को कहे गए वचन के अनुसार आकार देता और बनाता है।
- परमेश्वर का आत्मा लोगों पर मंडरा सकता है और उन्हें अलौकिक भौतिक बल और योग्यता प्रदान कर सकता है।
- जब किसी स्त्री या पुरुष को विशिष्ट कार्य को पूरा करने हेतु परमेश्वर द्वारा भेजा जाता है और पवित्र आत्मा द्वारा अभिषेक किया जाता है, तब कोई विरोध या शत्रु का कोई कार्य बच नहीं पाता। वह कार्य आत्मा की सामर्थ से पूरा होता है।
- पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा, हम विश्वासी उन कामों को कर सकते हैं, जो यीशु ने किए।
- हर एक विश्वासी आत्मा के उण्डेले जाने का और उसके या उसके जीवन के द्वारा परमेश्वर के आत्मा की सामर्थ को अनुभव कर सकता है!
- प्रारंभिक कलीसिया मात्र सैद्धांतिक कलीसिया नहीं थी, जो केवल परमेश्वर के विषय में बोलती रहे। प्रारंभिक कलीसिया परमेश्वर को अपने मध्य अनुभव करती थी और खोए हुए संसार के समक्ष परमेश्वर की सामर्थ प्रगट करती थी।
- वचन की सेवकाई बौद्धिक अभ्यास नहीं होना चाहिए। यह एक आत्मिक कार्य है जो परमेश्वर के आत्मा की सामर्थ से पूरा किया जाना चाहिए।
- विश्वास का वरदान, चंगाई का वरदान, और सामर्थ के कामों को करने का वरदान, पवित्र आत्मा के सामर्थ के आत्मा के रूप में कार्य करने का परिणाम हैं।

ऑल पीपल्स चर्च के प्रतिभागी

स्थानीय कलीसिया के रूप में संपूर्ण भारत देश में, विशेषकर उत्तर भारत में सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा ऑल पीपल्स चर्च अपनी सीमाओं के पार सेवा करता है; उसका मुख्य लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवा के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। संपूर्ण वर्षभर जवानों, और पासबानों तथा सेवकों के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों और पासबानों की महासभाओं का आयोजन किया जाता है। इसके अलावा, वचन में और आत्मा में विश्वासियों की उन्नति करने के उद्देश्य से अंग्रेजी तथा अन्य कई भारतीय भाषाओं में पुस्तकों की कई हज़ारों प्रतियां विनामूल्य वितरीत की जाती हैं।

जिन बातों की ओर परमेश्वर हमारी अगुवाई कर रहा है उसके लिए काफी पैसों की ज़रूरत होती है। हम आपको निमंत्रित करते हैं कि एक समय की भेंट या मासिक मदद भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ भागीदार बनें। देश भर में हमारे इस कार्य में हमारी सहायता करने हेतु आपके द्वारा भेजी गई कोई भी रकम सराहनीय होगी।

आप अपनी भेंट "ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर" के नाम से चेक/बैंक ड्राफ्ट के जरिए हमारे ऑफिस के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा आप अपना योगदान सीधे हमारे बैंक खाते की जानकारी लेकर सीधे बैंक में जमा कर सकते हैं। *(कृपया इस बात को ध्यान में रखें : ऑल पीपल्स चर्च के पास एफ.सी.आर. ए. परमीट नहीं है, अतः हम केवल भारतीय नागरिकों से बैंक योगदान पा सकते हैं। यदि आप चाहते हैं, तो दान भेजते समय, आप स्पष्ट रूप से यह लिख सकते हैं कि ए.पी.सी. की किस सेवकाई के लिए आप अपने दान भेजना चाहते हैं।)*

बैंक खाते का नाम : ऑल पीपल्स चर्च

खाता क्रमांक : 0057213809

आय एफ एस सी क्रमांक : CITI0000004

बैंक : Citibank N.A., 506-507, Level 5, Prestige Meridian 2, # 30, M.G. Road, Bangalore - 560 001

उसी तरह, कृपया जब भी हो सके, हमें और हमारी सेवकाई को प्रार्थना में स्मरण रखें। **धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे।**

ऑल पीपल्स चर्च के प्रकाशन

बदलाव

अपनी बुलाहट से समझौता न करें

आशा न छोड़ें

परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना

परमेश्वर एक भला परमेश्वर है

परमेश्वर का वचन

सच्चाई

हमारा छुटकारा

समर्पण की सामर्थ

हम भिन्न हैं

कार्यस्थल पर महिलाएं

जागृति में कलीसिया

प्रत्येक काम का एक समय

आत्मिक मन से परिपूर्ण और पृथ्वी पर बुद्धिमान

पवित्रा लोगों को सिद्ध बनाना

अपने पास्टर की कैसे सहायता करें

कलह रहित जीवन जीना

एक वास्तविक स्थान जो स्वर्ग कहलाता है

परिशद्ध करने वाले की आग

व्यक्तिगत और पीढ़ियों के बन्ध्नों को तोड़ना

आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पहचानना

राज्य का निर्माण करने वाले

खुला हुआ स्वर्ग

हम मसीह में कौन हैं

ईश्वरीय कृपा

परमेश्वर का राज्य

शहरव्यापी कलीसिया में ईश्वरीय व्यवस्था

मन की जीत

जड़ पर कुल्हाडी रखना

परमेश्वर की उपस्थिति

काम के प्रति बाइबल का रवैया

ज्ञान, प्रकाश और सामर्थ का आत्मा

अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के अदभुत लाभ

प्राचीन चिन्ह

उपर्युक्त सभी पुस्तकों के पी डी एफ संस्करण निःशुल्क डाऊनलोड के लिए हमारे चर्च वेब साईट पर उपलब्ध हैं। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों की निःशुल्क प्रतियां प्राप्त करने हेतु कृपया हमसे ई–मेल या डाक द्वारा संपर्क करें।

रविवार के संदेश के एम पी 3 ऑडियो रिकार्डिंग, तथा कॉन्फ्रन्स और हमारे गॉड टी. व्ही. कार्यक्रम 'लिविंग स्ट्रांग' के विडियो रिकार्डिंग को सुनने या देखने के लिए हमारे वेब साईट को भेंट दें।

भारत में ऑल पीपल्स चर्च की शाखाएं

ऑल पीपल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपल्स चर्च (एपीसी) का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

एपीसी में हम पवित्र आत्मा के अभिषेक एवं सामर्थ्य के साथ संपूर्ण एवं किसी प्रकार का समझौता न करते हुए वचन की शिक्षा देने के प्रति समर्पित हैं। हम विश्वास करते हैं कि उत्तम संगीत, सृजनात्मक प्रस्तुति, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि आदि चिन्ह, अद्भुत कार्य, आश्चर्यकर्म और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ पवित्र आत्मा की सामर्थ में वचन का प्रचार करने की परमेश्वर द्वारा निर्धारित पद्धतियों का स्थान कभी नहीं ले सकते (1 कुरि. 2:4,5; इब्रा. 2:3,4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारा तरीका पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा जुनून लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह समान पविपक्वता है।

वर्तमान में ऑल पीपल्स चर्च नीचे दिये पतों पर स्थित हैं।

ऑल पीपल्स चर्च –बंगलौर (कर्नाटक)
ऑल पीपल्स चर्च –मंगलौर (कर्नाटक)
ऑल पीपल्स चर्च –कल्याण मुम्बई (महाराष्ट्र)
ऑल पीपल्स चर्च –ब्रम्हपुर (उड़ीसा)
ऑल पीपल्स चर्च –नागपुर (महाराष्ट्र)
ऑल पीपल्स चर्च –रायचूर (कर्नाटक)
ऑल पीपल्स चर्च –पुणे (महाराष्ट्र)
ऑल पीपल्स चर्च –दिमापुर (नागालैंड)
ऑल पीपल्स चर्च –कोहिमा (नागालैंड)

समय–समय पर नयी कलीसियाओं की स्थापना हो रही है। वर्तमान सूची ऑल पीपल्स चर्च के साथ सम्पर्क करने या अध्कि जानकारी के लिए कृपया आप हमारी वेबसाइट www.apcwo.org में जायें, अथवा contact@apcwo.org पर ई–मेल भेजें।

बाइबल कॉलेज

विश्वसनीय एवं योग्य स्त्री और पुरुषों को सुसज्जित करने, प्रशिक्षित करने और भारत तथा अन्य देशों में सेवा हेतु भेजने के उद्देश्य से ऑगस्ट 2005 में ऑल पीपल्स चर्च – बाइबल कॉलेज एवं मिनिस्ट्री ट्रेनिंग सेन्टर (APC - BC& MTC) की स्थापना की गई, ताकि गांवों, नगरों और शहरों को यीशु मसीह के लिए प्रभावित किया जा सके।

APC - BC& MTC दो कार्यक्रम प्रदान करता है :

- दो साल का **बाइबल कॉलेज** कार्यक्रम पूर्णकालीन विद्यार्थियों के लिए है और उत्कृष्ट शिक्षा के साथ आत्मिक और व्यवहारिक सेवा प्रशिक्षण प्रदान करता है। दो वर्षीय कार्यक्रम पूरा करने के बाद विद्यार्थियों को **डिप्लोमा इन थियोलॉजी ॲण्ड क्रिश्चियन मिनिस्ट्री** (Dip. Th.& CM) प्रदान की जाएगी।

- प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री ट्रेनिंग बाइबल कॉलेज के उन पद्वीधरों के लिए है जो व्यवहारिक प्रशिक्षण पाना चाहते हैं। एक या दो साल पूरा करने वालों को **सर्टिफिकेट इन प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री** प्रदान किया जाएगा जो उनके प्रशिक्षण काल को दर्शाता है।

कक्षाएं अंग्रेजी में होती हैं। हमारे पास प्रशिक्षित तथा अभिषक्त शिक्षक हैं।

इसके अतिरिक्त, सन 2012 में, चाम्पा क्रिश्चियन हॉस्पिटल की सहभागिता से हमने चाम्पा, छत्तीसगढ़ में अपने प्रथम अल्पकालीन (2.5 महीने) कार्यक्रम का संचालन किया। हमने इस कॉलेज से 45 विद्यर्थियों को प्रशिक्षित किया।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपको प्यार करता है?

लगभग 2000 वर्ष पहले परमेश्वर इस संसार में एक मनुष्य बनकर आए। उनका नाम यीशु है। उन्होंने पूर्ण पापरहित जीवन जीया। चूँकि यीशु मानव रूप में परमेश्वर थे, उन्होंने जो कुछ कहा और किया उसके द्वारा हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट किया। उन्होंने जो वचन कहे वे परमेश्वर के ही वचन थे। जो कार्य उन्होंने किये वे परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने बहुत से चमत्कार इस पृथ्वी पर किये। उन्होंने बीमारों और पीड़ितों को चंगा किया। अंधों को आंखें दीं, बहिरों के कान खोले, लंगड़ों को चलाया और हर प्रकार की बीमारी और रोग को चंगा किया। उन्होंने चमत्कार करके कुछ रोटियों से बहुतों को खाना खिलाया था। तूफान को शान्त किया और अन्य बहुत से अद्‌भुत काम किए।

ये सभी कार्य हमारे समक्ष यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है जो यह चाहता कि मनुष्य ठीक, स्वस्थ और प्रसन्न रहें। परमेश्वर मनुष्यों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है।

परमेश्वर ने मानव बनकर इस पृथ्वी पर आने का निश्चय क्यों किया? यीशु इस संसार में क्यों आए?

हम सबने पाप किया है और ऐसे काम किए हैं जो परमेश्वर के समक्ष ग्रहण योग्य नहीं हैं जिसने हमें बनाया है। पाप के परिणाम होते हैं। पाप एक बड़ी दीवार की तरह परमेश्वर और हमारे बीच में खड़ी है। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उसे जानने और उससे अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने से रोकता है जिसने हमें बनाया है। अतः हममें से बहुत से लोग इस खालीपन को अन्य वस्तुओं से भरना चाहते हैं।

हमारे पापों का एक और परिणाम यह है कि हम परमेश्वर से सदा के लिए दूर रहते हैं। परमेश्वर के न्यायालय में पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से सदा के लिए अलगाव है जो हमें नर्क में बिताना पड़ेगा।

परन्तु शुभ समाचार यह है कि हम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर से सम्बन्ध रख सकते हैं। बाइबल कहती है, **"पाप की मजदूरी (भुगतान) तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है"** (रोमियों 6:23)। यीशु ने सारे संसार के पापों के लिए मूल्य चुकाया जब उसने क्रूस पर अपने प्राण दिये। तब तीसरे दिन वह जीवित हो गए, बहुतों को उन्होंने अपने आपको जीवित दिखाया और तब वह वापस स्वर्ग चले गए।

परमेश्वर प्रेम और दया का परमेश्वर है। वह नहीं चाहता कि कोई भी नर्क में नाश हो। इसलिए वह आया ताकि सारी मानव जाति को पाप से छुटकारे और उसके अनन्त परिणामों

से बचा सके। वह पापियों को बचाने– आप और मुझ जैसे लोगों को पाप और अनन्त मृत्यु से बचाने आया था।

पाप की निशुल्क क्षमा प्राप्त करने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है–जो कुछ उसने क्रूस पर किया उसे स्वीकार करना और उस पर पूर्ण हृदय से विश्वास करना है।

जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रेरितों के काम 10:43)।

यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 10:9)।

आप भी अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकते हैं यदि आप प्रभु मसीह पर विश्वास करें।

निम्नलिखित एक साधरण प्रार्थना है ताकि इससे आपको यह फैसला करने में और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपके लिए किए क्रूस के कार्य पर विश्वास करने में सहायता कर सके। यह प्रार्थना आपकी सहायता करेगी कि आप यीशु के कार्य को स्वीकार करके अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकें। यह प्रार्थना मात्र एक मार्गदर्शिका है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं :

प्रिय प्रभु यीशु, आज मैंने समझा है कि आपने मेरे लिए क्रूस पर क्या किया था। आप मेरे लिए मारे गए! आपने अपना बहुमूल्य रक्त बहाया और मेरे पापों की कीमत चुकाई ताकि मुझे पापों की क्षमा मिले। बाइबल मुझे बताती है कि जो कोई आप में विश्वास करता है उसे उसको पापों की क्षमा मिलती है।

आज मैं आपमें विश्वास करने और जो कुछ आपने मेरे लिए किया है, उसको स्वीकार करने का फैसला करता हूँ, कि आप क्रूस पर मारे गए और फिर जीवित हो गए। मैं जानता हूँ कि मैं अपने आपको अच्छे कामों के द्वारा नहीं बचा सकता हूँ। मैं अपने पापों की क्षमा कमा नहीं सकता हूँ।

आज मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ और मुँह से कहता हूँ कि आप मेरे लिए मारे गए। आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप मृतकों में से जीवित हो गए और आपमें विश्वास करने के द्वारा मैं अपने पापों की क्षमा और पाप से छुटकारा प्राप्त करता हूँ।

प्रभु यीशु धन्यवाद। मेरी सहायता करें कि मैं आपको प्रेम कर सकूँ। आपको और अधिक जान सकूँ और आपके प्रति विश्वासयोग्य रह सकूँ। आमीन!

नोट्स

नोट्स

पिता और पुत्र के साथ पवित्र आत्मा भी परमेश्वर है। और वह यहां पर पृथ्वी पर है – परमेश्वर के लोगों के जीवनों में और उनके द्वारा कार्य करता है। वह कई भिन्न तरीकों से खुद को अभिव्यक्त करता है और परमेश्वर के लोगों में और उनके द्वारा कार्य करता है, वह कई कार्यों को हासिल करने हेतु उन्हें योग्य बनाता है। इस पुस्तक में हमारा उद्देश्य आपको परमेश्वर के आत्मा के बुद्धि, प्रकाशन और सामर्थ के पहलूओं से परिचित कराना है।

परमेश्वर का आत्मा हर विश्वासी में और उसके द्वारा कार्य करना चाहता है, हम में से हर एक की मदद करना चाहता है कि हम वह सबकुछ बनें जिसकी योजना परमेश्वर ने बनाई है, और उसे पूरा करें जिसकी योजना उसने तैयार की है। परंतु वह केवल उसी प्रमाण में कार्य कर सकता है और करेगा, जिसकी हम उसे अनुमति देंगे। हम आपको प्रोत्साहन देना चाहते हैं कि आप इच्छा रखेंगे और परमेश्वर के आत्मा को अनुमति देंगे कि वह आपमें और आपके द्वारा सामर्थ का आत्मा बने। ताकि संसार यह जानें कि यीशु ही सब का प्रभु है!

आशीष रायचूर

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org